Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

बाल्मीकि रामायण में देव कन्याओं का मनोविश्लेषण

सुधीर कुमार[1]*, डॉ॰ मीनेश जैन[2]

[1] शोध छात्र पीएच॰डी॰ (संस्कृत), सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

[2] शोध-निर्देशक, संस्कृत-विभाग, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार- देवी नारियों के अन्तर्गत गंगा, उमा, सोमदा, देववती आदि देवी नारियों की मनोस्थिति का विश्लेषण अभिप्रेय है।

----------X----------

उमा:

उमा का विवाह हिमवान् पर्वत से होता है। मेरू पर्वत की मनोहारिणी पुत्री मेना बनती है। उस मेरा से हिमवान् की दो कन्याओं का जन्म होता है। 1 मेना के गर्भ से जो प्रथम कन्या उत्पन्न होती है वह गंगा होती है। मेना के गर्भ से उत्पन्न हिमवान् की द्वितीय कन्या उमा नाम से प्रसिद्ध होती है। 2 उमा उत्तम एवं कठोर व्रत का पालन करती हुई घोर तपस्या में संलग्न हो जाती है। तथा पयोमय धन का संचय करती है। गिरिराज उग्र तपस्या में संलग्न अपनी इस विश्ववन्दिता पुत्री उमा का विवाह अनुपम प्रभावशाली भगवान् रूद्र से कर देते है। 3 परम बुद्धिमान महान् देवता भगवान् नीलकण्ठ के उमादेवी के साथ क्रीड़ा विहार करते हुए सौ दिव्य वर्ष व्यतीत हो जाते हैं।4 इतने वर्ष पर्यन्त विहार करने के पश्चात् भी महादेव का उमादेवी के गर्भ से कोई पुत्र उत्पन्न नही होता है। यह देख कर ब्रह्मा , पृथ्वी आदि सभी देवता उन्हें इस प्रकार के व्यवहार से रोकने का उद्योग करने लगते हैं।5

वे भगवान् रूद्र से कहते हैं, "सुरश्रेष्ठ! ये लोक आपके तेज को नहीं धारण कर सकेंगें , अतः आप क्रीड़ा से निवृत्त हो वेदबोधित तपस्या से युक्त होकर देवी के साथ तप कीजिए। तीनों लोगों के हित की कामना से अपने तेज (वीर्य) को तेजः स्वरूप अपने आप में ही धारण कीजिए । इन सब लोकों की रक्षा कीजिए। लोकांे का विनाश मत कीजिए।6

भगवान् महादेव अपना तेज पृथ्वी पर छोड़ते हैं। जिससे पर्वत, वन व्याप्त हो जाते है। अग्निजनित महातेजस्वी कार्तिकेय का प्रादुर्भाव होता है। तदनन्तर ऋषियों सहित देवता अत्यन्त प्रसन्नचित होकर देवी उमा तथा भगवान् शिव का बड़े भक्तिभाव से पूजन करते हैं।7

परन्तु इस समस्त सम्पूर्ण वृत्तान्त से गिरिराजनन्दिनी उमा के नेत्र क्रोध से लाल हो जाते है। वह देवताओं को रोषपूर्ण इस प्रकार शापित करती है, देवताओ! पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पति के साथ मेरे समागम को जिन्होंने रोका है। वे आप लोग भी अपनी पत्नियों से सन्तान उत्पनन करने योग्य नहीं रह जाएंगे। आज से तुम्हारी पत्नियां सन्तानोत्पादन नहीं कर सकेंगी सन्तानहीन हो जायेंगी।8 सभी देवताओं से ऐसा कहकर उमा देवी ने पृथ्वी को भी शाप देते हुये कहा, भूमे! तेरा एक रूप नहीं रह जायेगा। तू बहुतों की भार्या होगी। खोटी बुद्धि वाली पृथ्वी! तू चाहती थी कि मेरे पुत्र न हो , अतः मेरे क्रोध से कलुषित होकर तू भी पुत्रजनित सुख अथवा प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर सकेंगी।9

इस समस्त वृत्तान्त से उमा देवी की सन्तान प्राप्ति के प्रति उत्सुकता तथा इच्छा की पूर्ति न होने पर क्रोध से युक्त होना , उसका स्वभाविक क्रोधाभिभूत होने की मानसिकता है , परिणामस्वरूप उसका देवताओं तथा पृथ्वी को शाप देना भी स्वाभाविक प्रक्रिया हे। तप के प्रति भी इसकी अत्यन्त निष्ठा है इस शाप देने के पश्चात् उमा देवी पुनः भगवान महेश्वर के संग तप करने लगती है। 10 जहाँ उमा की यह क्रोध से परिपूर्ण मानसिकता प्रकट होती है।

www.ignited.in

उपर्युक्त उमा के इस स्वरूप के अतिरिक्त रामायण में उसका करूणामय स्वरूप भी दृष्टिगोचर होता है। एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि सन्धया नामक एक राक्षसी मन्दराचल पर्वत पर जाकर एक पुत्र को जन्म देती है। वह नवजात शिशु को उसी स्थान पर वहीं पर छोड़कर अपने पति विद्युतकेश के साथ रतिक्रीड़ा के लिये चली जाती है।11 उसका छोड़ा गया वह गर्भ मेघ की गम्भीर गर्जना के समान शब्द करने लगता है। 12 उस समय भगवान् शिव पार्वती (उमा) जी के साथ बैल पर चढ़कर वायुमार्ग से जा रहे होते हैं वे उस बालक के रोने का स्वर सुनते हैं।

रूदन सुनकर पार्वती सहित शिव उस रोते हुए राक्षस कुमार की ओर देखते है। उसकी दयनीय अवस्था पर दृष्टिपात करके माता पार्वती (उमा) के हृदय में करूणा का स्रोत उमड़ पड़ता है। पार्वती की प्रेरणा से त्रिपुरसूदन भगवान् शिव उस राक्षस बालक को उसकी माता की अवस्था केसमान ही युवक बना देते हैं। 13 इतना ही नहीं, पर्वती जी का प्रिय करने की इच्छा से अविनाशी एवं निर्विकार भगवान् महादेव उस बालक को अमर बनाकर उसके रहने के लिए एक आकाशचारी नगराकार विमान भी देते हैं।14 तत्पश्चात् पार्वती यह वरदान देती है आज से राक्षसियां जल्दी ही गर्भ धारण करंेगी , शीघ्र ही उनका प्रसव करेंगी तथा उनका पैदा किया हुआ बालक तत्काल बढ़कर अपनी माता के ही समान अवस्था का हो जायेगा।15 इस प्रकार यहां पार्वती (उमा) की करूणापूर्ण मानसिकता परिलक्षित होती है।

गंगा:

गंगा जी का परिचय देते हुए महामुनि विश्वामित्र राम से कहते हैं, 'सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा तथा भागवती उमा ये दोनों गिरिराज हिमालय की कन्याएं हैं।' सारा संसार इनके चरणों में मस्तक झुकाता है।"16

गंगा हिमवान् की जयेष्ठ पुत्री है। 17 यह सदैव ही हितकारी रही हैं सभी देवताओं की सिंद्धि के लिये गंगा जी त्रिभुवन का हित करने के लिए स्वच्छन्द पथ पर विचरने वाली अपनी लोकपावनी पुत्री गंगा को धर्मपूर्वक उन्हें प्रदान कर दिया।18

तीनों लोकों के हित की इच्छा करने वाले देवता त्रिभुवन की भलाई के लिये ही गंगा जी को लेकर मन ही मन कृतार्थता का अनुभव करते हुये चले गये। 19 कुमारी गंगा रमणीया देवनदी के रूप में देवलोक में आरूढ़ हो गई तथा जलरूप में प्रवाहित हो लोगों के पाप दूर करती हुई रसातल में पहुंचती है।20

सागर के पुत्रों की गति के लिये गंगा जल से तर्पण की आवश्यकता होने से गंगा जी को पृथ्वी पर लाने के लिए महात्मा भगीरथ घोर तपस्या करते हैं। ब्रहमा जी राजा भगीरथ को बताते हैं कि गंगा जी के गिरने का वेग यह पृथ्वी सहन नहीं कर पायेंगी। शंकर के सिवा कोई अन्य इसको धारण करने में समर्थ नहीं है।21

गंगा बहुत बड़ा रूप धारण करके अपने वेग को दुस्साह बनाकर आकाश से शंकर के शोभायमान मस्तक पर गिरती है।22 वह यह सोचती है कि वह अपने दुर्धर वेग के साथ शंकर जी को भी लेकर पाताल मे घुस जाएगी। 23 परन्तु शंकर गंगा जी के इस अभिप्राय को समझ जाते है। शिव के जटाजाल में उलझकर किनारे आकर भी गंगादेवी वहां से निकलने का मार्ग नहीं पा सकी और बहुत वर्षों तक उस जटाजूट में भटकती रहती है।24 यहां पर गंगा में कुछ अभिमान से युक्त मानसिकता दिखाई पड़ती है। भगीरथ द्वारा पुनः शंकर जी की आराधना करने पर महादेव जी प्रसन्न होकर गंगा को बिन्दुसरोवर में ले जाकर छोड़ देते हैं। वहां छूटते ही गंगा की सात धाराएं हो जाती है।25

हलादिनी, पावनी और नलिनी ये कल्याणमय जल से सुशोभित गंगा की तीन गंगलमयी धाराएं पूर्व दिशा की ओर चली जाती है तथा सुचक्षु, सीता एवं महानदी सिन्धु ये तीन शुभ धाराएं पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। सातवीं धारा महाराज भगीरथ के पीछे-पीछे चलने लगती है। 26 इस प्रकार गंगा जी अपनी कल्याणमय पंरवृत्ति से भगीरथ पर ही नहीं , अपितु समस्त संसार पर अनुग्रह करती है।

देव कार्य सिद्धि हेतु गंगा जी शिव के तेज को धारण करके देवताओं को कार्तिकेय रूपी सेनापति प्रदान करती है। जैसा कि ऊपर वर्णित किया जा चुका है कि पार्वती का देवताओं को शाप था कि उनकी पत्नियों के गर्भ से कोई सन्तान उत्पन्न नहीं होगी। तब देवताओं को आश्वासन देते हुऐ ब्रहमा जी कहते हैं , उमा की बड़ी बहिन आकाश गंगा , जिनके गर्भ में शंकर जी के उस तेज को स्थापित करके अग्निदेव एक ऐसे पुत्र को जन्म देंगें, जो देवताओं के शत्रुओं का दमन करने में समर्थ सेनापति होगा।27

www.ignited.in

देवताओं ने अग्नि देवता से प्रार्थना करते हुये कहते है , 'देव! हुताशन। यह देवताओं का कार्य है , इसे सिद्ध करें। भगवान् रूद्र के उस महान तेज को अब आप गंगा जी में स्थापित कर दीजिए।28 तब अग्निदेव गंगा जी के निकट आकर कहते हैं , देवि! आप इस गर्भ को धारण करें। यह देवताओं का प्रिय कार्य है- अग्निदेव की बात सुनकर गंगा जी के सभी ओर बिखेर देते हैं। 29 इस प्रकार अग्निदेव गंगा देवी को सब ओर से उस रूद्र तेज से अभिषिक्त कर देते हैं गंगा जी के सभी स्रोत उससे परिपूर्ण हो जाते है।30 अतः गंगा देवी की परोपकारी मनोभावना स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होती है।

सोमदा:

गन्धर्व भी देवताओं की एक श्रेणी होती है। रामायण में एक गन्धर्वकुमारी सोमदा का चरित्र प्राप्त होता है , जोकि उर्मिला की पुत्री है। चूली नाम से प्रसिद्ध एक महातेजस्वी, सदाचारी एवं ऊध्वरेता (नैष्ठिक ब्रह्मचारी) मुनि वेदोक्त तप का अनुष्ठान कर रहे होते हैं। यह सोमदा नामक गन्धर्वकुमारी तपस्वी मुन के (अनुग्रह की इच्छा से उनकी सेवा) करती है 31 उसकी सेवा से अत्यधिक सन्तुष्ट मुनि उसकी इच्छा पूछते हैं। 32 सोमदा मुनि से मधुर स्वर में कहती है , महर्षे! आप ब्राह्मी सम्पत्ति (ब्रह्मतेज) से सम्पन्न होकर ब्रह्मस्वरूप हो गये हैं, अतः आप महान् तपस्वी है। मैं आपसे ब्राह्म तक से युक्त धर्मात्मा पुत्र प्राप्त करना चाहती हूँ। मैं न तो किसी की पत्नी हुई हूँ और न आगे होऊंगी। आपकी सेवा में आई हूँ, आप अपने ब्रह्म बल से मुझे पुत्र प्रदान करें। 33 इस सोमदा की सेवा से सन्तुष्ट हुये महर्षि चूली उसे परम उत्तम ब्राह्म तप से सम्पन्न पुत्र प्रदान करते हैं।34

इस प्रकार सोमदा की तपोयुक्त एवं पुत्र प्राप्ति की लालसा वाली मानसिकता दृष्टिगोचर होती है।

देववती:

विश्वावसु के समान तपस्वी एवं तेजस्वी ग्रामणी नामक गन्धर्व की पुत्री का नाम देववती है। यह कन्या दूसरी लक्ष्मी के समान दिव्य रूप तथा यौवन से सुशोभित होकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध होती है। धर्मात्मा ग्रामणी राक्षसों की मूर्तिमयी राजलक्ष्मी के समान देववती का हाथ राक्षस सुकेश के हाथ में दे देते हैं।35 ऐश्वर्य से सम्पन्न प्रियतम पति को प्राप्त कर देववती ऐसे सन्तुष्ट होती हैं , जैसे किसी निर्धन को धन की राशि मिल गयी हो।36 तदनन्तर समय आने पर सुकेश से देववती के गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न होते हैं , जो तीन अग्नियों के समान तेजस्वी है।37

गन्धर्व होते हुये राक्षस से विवाह होने पर भी यह देववती प्रसन्नतायुक्त एवं संतुष्टि से परिपूर्ण मानसिकता का प्रदर्शन करती है।

संदर्भ सूची:

1. शैलेन्द्रो हिमवान् राम धतूनामाकरो महान्।
तस्य कन्याद्वयं राग रूपेणप्रतिमं भूवि।
या मेरूदुहिता राम तयोर्माता सुमध्यमा।
नाम्ना मेना मनोज्ञा वै पत्नी हिमवतः प्रिया।।
वा0 रा0, 35/14-15

2 तस्यां गड्गेयमभवज्जयेष्ठा हिमवतः सुता।
उमा नाम द्वितीयाभूत् कन्या तस्यैव राघवं।ं
वही, बा0 35/16

3 उग्रेण तपसा युक्तां ददौ शैलवरः सुताम्।
रूद्रायाप्रतिरूपाय उमां लोकनमस्कृताम्। वही ,
बा0 35/21

4 तस्य संक्रीडमानस्य महादेव्य धीमतः।
शितिकण्ठस्य देवस्य दिव्यं वर्षशतं गतम! वा 0
रा0, बा0 36/6

5 च चापि तनयो राम तस्यामासीत् पंरतप।
सर्वे देवाः समुद्युक्ताः पितामहपुरोगमाः। वही ,
बा0 36/7

6 न लोका धरयिष्यन्ति तव तेजः सुरोत्तम।
ब्रह्मोण तपसा युक्तो देव्या सह तपश्चरं।
त्रौलोक्यहितकामार्थ तेजस्तेजसि धरय। रक्ष
सर्वानिमाँल्लोकान् नालोकं कर्तुमर्हसि।। वही ,
बा0 36/10-11

7 एवमुक्तः सुरपतिः प्रमुमेच महाबलः।

www.ignited.in

तेजसा पृथवी येन व्याप्ता सगिरिकानना । वही , बा0 36/16

यत्र जातो महातेजाः कार्तिकेयाऽग्निसम्भवः। अथोमां च शिवं चैव देवाः। सर्षिगणास्त्था। पूजयामासुरत्यर्थ सुप्रीतमनसस्तदा । वही , बा0 36/19-20

8 अथ शैलसुता राम त्रिदशानिदमब्रवीत्। समन्युरशपत् सर्वान् क्रोधसंरक्तलोचना। यस्मान्निवारिता चाहं संगता पुत्रकाम्यय। अपत्यं स्वेषु दारेषु नोत्पादयितुमर्हथ।

9 एवमुक्तवा सुरान् सर्वाञ्शशाप पृथ्वीमपि। अवने नैकरूपा त्वं बहुभार्या भविष्यसि। न च पुत्रकृतां प्रीतिं मत्क्रोधकलुषीकृता। प्राप्यसि त्वं सुदुर्मेधे मम पुत्रमनिच्छती। वही, बा0 35/23-24

10 स गत्वा तप आतिष्ठत् पाश्र्वे तस्योत्तरो गिरे।

हिमवत्प्रभवे श्रृगे सह देव्या महेश्वरः। वही , बा0 35/26

11 ततः सा राक्षसी गर्भ घनगर्भसमप्रभम्। प्रसूता मन्दरं गत्वा गंगा गर्भमिवाग्निजम्।

समुत्सृत्य तु सा गर्भ विद्युत्केशरतार्थिनी। वा 0 रा0, उ0, 4/24

12 उत्सृष्टस्तु तदा गर्भो घनशब्दसमस्वनः। वही, उ0, 4/25

13 अपश्यदुमया सार्ध रूदन्तं राक्षसात्मजम्। कारूण्यभावात् पार्वत्या भवस्त्रिपुरसूदनः। तं राक्षसात्मजं चक्रके मातुरेव वयः समम् । वही , बा0 4/28-29

14 अमरं चैव तं कृत्वा महादेवोऽक्षरोऽव्ययः। पुरमाकाशगं प्रादात् पार्वत्याः। प्रियकाम्यय। वही , बा0 4/29-30

15 उमयापि वरे दत्तो राक्षसीनां नृपात्मज। सद्योपलब्धिर्गर्भस्य प्रसूतिःसद्य एव च।

सद्य एव वयः प्राप्तिं मातुरेव वयःसमम्। वही , उ0 4/30-31

16 एते ते शैलराजस्या सुते लोकनमसकृते। गंगा च सरितां श्रेष्ठा उमादेवी च राघव। वा 0 रा0 बा0, 35/22

17 तस्यां गंगेयमभवज्जयेष्ठा हिमवतः सुता। वही , बा0 35/16

18 अथ ज्येष्ठां सुराः सर्वे देवकार्यचिकीर्षया। शैलेन्द्र वरयामासुर्गंगा त्रिपयगां नदीम्। ददौ धर्मेण हिमवास्तनयां लोकपावनीम । स्वच्छन्दपथगां गंगा त्रेलोक्यहितकाम्या। वही, बा0 35/17-18

19 प्रतिगृह्म त्रिलोकार्थ त्रिलोकहितकाडिक्षणः।

गंगामादाय तेऽगच्छन् कृतार्थेनान्तरात्मना। वही , बा0 35/19

20 एतत् ते सर्वमाख्यातं यथा त्रिपथगामिनी। खं गता प्रथमं मात गतिं गमिमतां वर। सैष सुरनदी रम्या शैलेन्द्रतन्या तदा। सुरलोकं समारूढ़ा विपापा जलवाहिनी। वही, बा0 35/23-24

21 इयं हैमवती ज्येष्ठा गंगा हिमवतः सुता । तां वै धरयितुं राजन् हरस्तत्र नियुज्यताम गंगायाः पतनं राजन् पृथ्वी न सहिष्यते। तां वै थारयितुं राजन नान्यं पश्यामि शूलिनः। वा 0 रा0 बा0 42/23-24

22 ततो हैमवती ज्येष्ठा सर्वलोकनमस्कृता। तदा सातिमहद्रूपं कृत्वा वेगं च दुःसहम्। आकाशादपतद् राम शिवे शिवशिरस्युत। वही , बा0 43/4-5

23 ततो हैमवती ज्येष्ठा सर्वलोकनमस्कृता। तदा सातिमहद्रूपं कत्वा वेगं च दुःसहम्।। आकाशदपतद् राम शिवे शिवशिरस्युत। वही , बा0 43/4-5

24 नैव सा निर्गमं लेभे जटामण्डलमन्ततः।

तत्रैवाबभ्रमद् देवी संवत्सरगणन् बहून्।। वही , बा0 43/9

25 विससर्ज ततो गंगा हरो बिन्दुसरः प्रति।

www.ignited.in

तस्यां विसृज्यमानायां सप्त स्रोतांसि जज्ञिरे। वही , बा0, 43/11

26 हलादिनी पावनी चैव नलिनीच तथैव च। तिस्रः प्राचीं दिशं जगमुर्गगं्ाा शिवजलाः शुभा। सुचक्षुश्चैव सीता च सिन्धुश्चेव महानदी। तिस्रश्चैता दिशं जग्मुः प्रतीचीं तु दिशं शुभाः सप्तमी चान्वगात् तासां भागीरथरथं तदा ।वा 0 रा0, बा0, 43/12-14

27 इयमाकाशगंगा च यस्यां पुत्रां हुताशनं। जनयिष्यति देवानां सेनापतिमरिंदमम्। वही , बा0 37/7

28 देवकार्यमिदं देव समाध्त्स्व हुताशन। शैलपुत्रयां महातेजो गंगाया तेज उत्सृज। वही, बा0 37/11

29 देवतानां प्रतिज्ञाय गंगासभ्येत्यः पावकः। गर्भ धरय वै देवि देवतानामिदं प्रियम्। इत्येतद् वचनं श्रुत्वा दिव्यं रूपमधरयत्। स तस्या महिमां दृष्टवा समनतादवशीर्यत। वही बा0, 37/12-13

30 वा0 रा0 बा0, 37/14

31 एतस्मिन्नेव काले तु चूली नाम महाद्युति। ऊध्र्वरेताः शुभाचारो ब्राहमं तप उपगमत्।।

तपस्यन्तमृषिं तत्र गन्धर्वी पर्युपासते। सोमदा नाम भदं्र ते उर्मिलातनया सदा । वही , बा0 33/11-12

32 स च तां कालयोगेन प्रोवाच रघुनन्दन। परितुष्टोऽस्मि भद्रं किं करोमि तव प्रियम्। वही , बा0 33/14

33 लक्ष्म्यासमुदितो ब्राहमभूतो महातपाः। ब्राहमेण तपसा युक्तं पुत्रमिच्छामि धार्मिकम्।। अपतिश्चास्मि भद्रं ते भार्या चास्मि न कस्यचित्। ब्राहमोणोपहगतायाश्च दातुमर्हसि मे सतुम। वही , बा0 33/16-17

34 तस्याः प्रसन्नो ब्रहमर्षिर्ददौ ब्राहममनुत्तमम्। ब्रहमदत्त इति ख्यातं मानसं चूलिनः सुतम्। वही , बा0 33/18

35 सुकेशं धर्मिक दृष्ट्वा वरलबधं्ा च राक्षसम्। ग्रामीणर्नाम गन्धर्वो विश्वावसुसमप्रभः। तस्य देववती नाम द्वितीया श्रीरिवात्मजा। त्रिषु लोकेषु विख्याता रूपयौवनशलिनी। तां सुकेशाय धर्मात्मा ददौ रक्षः श्रियं यथा। वा0 रा0, उ0 5/1-3

36 वरदानकृतैश्वर्य सा तं प्राप्य पतिं प्रियम्। आसीद् देववती तुष्टा धनं प्राप्येव निर्धनः। वही , बा0 5/3-4

37 ततः काले सुकेशस्तु जनयामास राघव। त्रीन् पुत्रान्जनयामास त्रेताग्निसमविग्रहान्।

वही, उ0 5/5-6

Corresponding Author

सुधीर कुमार*

शोध छात्र पीएच.डी. (संस्कृत), सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान